पोस्टमैन

हमारे जो पोस्टमैन हैं, बिलकुल अंतर्देशीय व्यक्तित्व वाले हैं - पहला मोड़ घुटने पर, दूसरा मोड़ कमर में और तीसरा मोड़ गर्दन पर। तीनों को मिलाकर आप चिपका दीजिए तो लगेगा जैसे कोई अंतर्देशीय पत्र लाल डिब्बे से निकालकर चाय पी रहा है। उनकी आदत है कि वह एकनॉलेजमेंट की तरह चिपक जाते हैं। मैंने उनसे कई बार कहा - "आपकी यह रजिस्टर्ड ए. डी. टाइप हरकत मुझे अच्छी नहीं लगती। वह कहते हैं - "पोस्टमैन तो सरकारी सुदामा है। एक मुट्ठी चावल में ही प्रसन्न रहता है। जिसे देखते हैं वही प्रोग्रेस कर रहा है और हम हैं कि इस जिन्दगी को मनिआर्डर की तरह जी रहे हैं। "

दिखने में हमारे पोस्टमैन साहब कोई विशेष सुन्दर नहीं हैं। वैसे भी पोस्टल डिपार्टमेंट को सुन्दरता से क्या लेना देना। आदमी पोस्ट आफिस इसलिए आता है कि अपने रिश्तेदारों को बताए कि वह कुशलपूर्वक है। बहुत हुआ तो साल - छः महीने में एक दिन यह भी बता देता है कि फलाने की शादी जम गई या फलाना अब नहीं रहा। जब पोस्ट आफिस का महत्व इतना सीमित है तो पोस्टमैन का सुन्दर होना या न होना पोस्टकार्ड लिखने वाले के लिए कोई महत्व नहीं रखता।

हम शोधकर्ताओं का तो पोस्ट आफिस से जन्म - जन्मांतर का रिश्ता है। कम से कम राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान वाले तो पोस्ट आफिस की कृपा पर ही जीवित हैं। हमारे यहां बगल में एक अन्य शोध संस्थान भी है। होता ऐसा है कि कई बार अनेक विदेश से आये उनके लिफाफे हमारे यहां पहुंच जाते हैं या हमारे लिफाफे उनकी डाक में पहुंच जाते हैं। मै जब पोस्टमैन साहब को उनके इस कृत्य की जानकारी देता हूं तो वह कहते हैं - "पोस्टमैन भी आदमी होता है, उससे भी भूल हो सकती है।"

एक दिन पोस्टमैन साहब अपनी गोल-गोल आंखें लगभग बाहर निकालकर कहते हैं - "हमारी तो यही कामना है कि भगवान हमें स्वर्ग में पोस्ट आफिस सुपरिटेंडेंट बना दें। मैंने कहा - "ऐसा मत कहिए, हम नरक वालों का तो ख्याल रखिए"। वह बोले -" पोस्टमैन स्वर्ग नहीं जायेगा, तो क्या सिंचाई विभाग का साहब जायेगा। इतनी ईमानदारी से लोगों की गाली खा रहे हैं, तो केवल इसी दिन के लिये कि आगे चलकर हमें आराम मिलेगा।" मैंने कहा - "एक काम कीजिए, थोड़ा - बहुत भ्रष्टाचार इधर भी शुरु कर दीजिए। जो टिकट बिना मोहर की आती है उसको दबा दीजिए। मैं आपसे बीस पैसे की टिकट पन्द्रह पैसे में ले लिया करुंगा। आखिर आपके भी बाल-बच्चे हैं। पोस्ट मैन साहब उदास हो गये। बोले -"कर भी लेते लेकिन हेड आफिस वाले पहले ही ऐसी टिकट निकाल लेते हैं। मैंने कहा- "हेड आफिस वालों के भी तो बाल-बच्चे हैं। मजा करने दीजिए उनको। चलिए, चाय पीकर आते हैं।"

चाय पीने के बाद फिर वह पोस्टल सर्विस की मुद्रा में स्थानागत हो गये। अपने शरीर को तीन जगह से मोड़ा और अंतर्देशीय पत्र की तरह लाल डिब्बे में घुस गये।

मनोहर अरोड़ा , "वरिष्ठ शोध सहायक, गंगा मैदानीय क्षेत्रीय केन्द्र, पटना"